शीतयुद्ध की प्रगति
(Development of cold war)

1945 के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शीतयुद्ध भयावह रूप धारण करता गया। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन संघर्ष के अखाड़े बन गये। सुरक्षा परिषद की प्रथम बैठक में ही सोवियत संघ के प्रतिनिधि ने पश्चिमी गुट पर कड़े व उग्र आक्षेप लगाए। जिससे जवाब में पश्चिमी गुट ने भी उसी प्रकार के आक्षेप लगाए। जिसके बाद प्रायः सभी बैठकों तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी दोनों गुटों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर में तेजी ही देखने को मिला।

विश्व के कुछ प्रदेश शीतयुद्ध के मुख्य केन्द्र बन गये जिसमें (i) दक्षिण पूर्वी यूरोप (ii) जर्मनी (iii) मध्य पूर्व (iv) दक्षिण पूर्व एशिया (v) संयुक्त राष्ट्र संघ का राजनीतिक मंच तथा (vi) अफ्रीका।

उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में सोवियत संघ तथा अमेरिका अपना-अपना प्रभुत्व कायम करने तथा अपनी सैद्धांतिक मान्यताओं को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रयत्नशील हो उठे। इसकी सम्यक् जानकारी का अध्ययन विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

पहला चरण (First phase from 1947 to 1953) :- इस चरण में शीत युद्ध की प्रगति के निम्नलिखित कारण थे। इस अवधि में परमाणु शक्ति के नियन्त्रण और नियंत्रण, निःशस्त्रीकरण, पराजित राष्ट्रों के साथ विभिन्न शांति-संधियों जर्मनी, बर्लिन, यूरोपीयन सुरक्षा समस्याओं, एशिया तथा अफ्रीका के विकसित राष्ट्रों के मध्य संबंध निर्णय इत्यादि सम्मिलित थे। मार्शल टीटो ने स्टालिन के प्रभुत्व को मानने से इंकार कर दिया। मार्शल टीटो की कार्यवाही शीत युद्ध के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि इससे यदि एक ओर गैर-साम्यवादी राष्ट्रों को प्रोत्साहन मिला तो दूसरी ओर सोवियत संघ का दृष्टिकोण भी कठोर रूप धारण कर लिया। इसके साथ ही साथ बर्लिन की नाकेबंदी, जर्मनी का विभाजन, नाटो की स्थापना, साम्यवादी चीन का अभ्युदय, कोरियाई युद्ध अमेरिका का जापान के साथ संधि इत्यादि। कोरियाई युद्ध के समय ही अमेरिका ने जापान के साथ शांति संधि पर हस्ताक्षर किए जिसके फलस्वरूप अमेरिका के इस नीति से सोवियत संघ ने इस की आलोचना की।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

द्वितीय-चरण (Second phase 1953 to 1958) :- द्वितीय विश्वयुद्ध की तीव्रता में अल्पकालीन परिवर्तन हुआ तथा दोनों महाशक्तियों ने तनाव को कम करने के लिए सोचना शुरू किया, जिसके अन्तर्गत हिन्दचीन का प्रश्न और शीतयुद्ध में उग्रता का दौर प्रारंभ, सैनिक संगठनों के निर्माण की होड़ आ गयी। पश्चिम एशिया के सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए तथा वहाँ के तेल कुओं पर अपना प्रभुत्व कायम रखने के लिए दोनों ही गुटों के बीच घोर संघर्ष चलता रहा। फारस तेल विवाद, लेबनान में अमरीकी फौज का उतरना, इराक की क्रांति आदि घटनाओं ने भी शीतयुद्ध को तीव्र करने में पर्याप्त सहायता की। इस क्षेत्र से संबंधित अमरीकी राष्ट्रपति द्वारा प्रतिपादित आइजन हॉवर सिद्धांत ने भी मध्य पूर्व में शीतयुद्ध को काफी उग्र बना दिया।

तृतीय-चरण (Third phase from 1958 to 1974) :- इसी अवधि में शीत युद्ध की उग्रता में कमी आई। 3 अगस्त 1959 को 20 वीं शताब्दी का सबसे महान कूटनीतिक चमत्का हुआ। उस दिन मास्को में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता और वाशिंगटन में स्वयं राष्ट्रपति आइजन हॉवर ने एक साथ यह घोषणा की कि कुछ ही महीनों में सोवियत प्रधानमंत्री ख्रुश्चेव संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा करेंगे और तत्पश्चात अमेरिकी राष्ट्रपति आइजन हॉवर सोवियत संघ की यात्रा पर जायेंगे। ख्रुश्चेव ने अमेरिका की यात्रा की, जहाँ सब जगह खूब स्वागत हुआ और दोनों महाशक्तियों ने उग्रता में कमी लाकर लोगों को ठंडक प्रदान की। लेकिन कुछ ही दिनों बाद यू-2 विमान कांड ने 'कैंप डेविड-भावना' को समाप्त कर दिया और एक बार फिर शीत युद्ध में उग्रता का उफान उत्पन्न हो गया। पेरिस शिखर सम्मेलन पर भी विमान अपहरण कांड का व्यापक प्रभाव पड़ा। पूरे विश्व में तनाव फैल गया। इसी बीच अमेरिकी राष्ट्रपति के पद को सीनेटर जॉन फिटजेरल्ड कैनेडी ने सुशोभित किया। नए राष्ट्रपति को बधाई देते समय ख्रुश्चेव ने यह आशा प्रकट की कि शीतयुद्ध में कमी लाने का प्रयास करेंगे। राष्ट्रपति कैनेडी ने भी आशाजनक उत्तर दिया, जिससे लोगों को यह महसूस होने लगा कि अब जरूर शीत युद्ध में कमी होगा और अल्पकाल के लिए कमी आई भी।

1962 में क्यूबा संकट ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक विस्फोटक रूप धारण कर लिया और शीतयुद्ध में पहले से भी अधिक उग्रता आ गई। लेकिन ख्रुश्चेव द्वारा संयम से काम लेने पर

स्थिति सामान्य हो गई और अमेरिका से क्यूबा की सुरक्षा का आश्वासन मिलने पर उसने अपने प्रक्षेपास्त्र केन्द्रों को हटाने की घोषणा कर दी, जिससे तृतीय विश्वयुद्ध का खतरा टल गया।

निष्कर्ष (Conclusion) :- निष्कर्षतः राष्ट्रपति आइजनहॉवर और सोवियत नेता ब्रेझनेव के काल में अन्य अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों के चलते भी शीतयुद्ध की स्थिति में उतार-चढ़ाव आता रहा। जब संघर्ष अमेरिका और सोवियत संघ तक सीमित था तब शीतयुद्ध का स्वरूप द्विध्रुवीय था, लेकिन 1954 में सोवियत-संघ-चीन संघर्ष के बाद शीतयुद्ध का स्वरूप त्रिध्रुवीय बनता गया, जिसका व्यापक प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर पड़ा। इस दौरान गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की उत्तरोत्तर बदलती हुई प्रभावशाली भूमिका ने शीतयुद्ध की उग्रता को काफी कम किया।

डॉ० राजू सोची
विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान
डी० के० कालेज, डुमरॉव
दिनांक - 27/05/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA